सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
नई दिल्ली

संक्षिप्त नोट
नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षा में पुतलीकला की भूमिका

पुतलीकला ने विश्व के अधिकांश भागों में ज्ञान के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुतलीकला, साहित्य, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य, नाटक जैसी सभी कला शैलियों के तत्वों को आत्मसात करती है और छात्रों की रचनात्मक क्षमताओं को विकसित करने में सक्षम बनाती है। भारत में पारंपरिक रूप से पुतलीकला को भारतीय पुराणों और दंत कथाओं के बारे में जानकारी प्रसारित करने के लोकप्रिय व सस्ते माध्यम के रूप में प्रयोग में लाया जाता रहा है।

चूंकि पुतलीकला एक सक्रिय कला शैली है, जो सभी आयु वर्गों के लिए उपयुक्त है, अत: इस संचार माध्यम को विद्यालयों में शिक्षा प्रदान करने की सहायक सामग्री के रूप में चुना गया है। सीसीआरटी विविध औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षण परिस्थितियों में प्रयुक्त किए जा सकने वाले कठपुतली कार्यक्रमों को तैयार करने, निर्मित और प्रदर्शित करने में व्यापक तथा समेकित प्रशिक्षण प्रदान करता है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षा में पुतलीकला की भूमिका पर वर्ष भर देश के सभी भागों के सेवारत प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।

यह कार्यशाला लगभग 13 कार्य दिवसों की होती है।

उद्देश्य:

- पुतली कला को शिक्षण में सहायक सामग्री के रूप में प्रस्तुत करना।
- निम्न लागत वाली सामग्रियों से एवं कक्षा वातावरण में आसानी से उपयोग में लाए जाने वाले दस्ताने, छाया, रॉड, धागा और अन्य प्रकार में कठपुतलियाँ बनाना तथा उन्हें चलाने का तरीका सिखाना।
- पुतलीकला के माध्यम से शिक्षण पाठ्यक्रम के विषयों के लिए शैक्षिक आलेखों तथा कार्यक्रमों को तैयार करना और मूल्यांकन के लिए प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।
- भारत की परम्परागत पुतलीकलाओं से अवगत कराना तथा पुतलीकारों से मिलने का अवसर प्रदान करना जिससे कि प्रतिभागी शिक्षक/शिक्षिकाएं भारतीय पुतलीकला के ज्ञान को अर्जित करने में सक्षम हो सकें।
- शिक्षक/शिक्षिकाओं को सस्ती शैक्षिक सामग्री के निर्माण के लिए प्रोत्साहित करना तथा उनसे छात्रों के लिए कक्षा की पढ़ाई के अभिन्न भाग के रूप में रचनात्मक गतिविधियाँ करवाना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चार भागों में विभाजित किया गया है –

: विभिन्न प्रकार की कठपुतलियों और उनकी हस्तकौशल तकनीकों की तैयारी।
: शैक्षिक पटकथा (स्क्रिप्ट) तैयार करना।
: कहानी कला, रोलप्ले, भाषण, माइम और मूवमेंट, संगीत और इसके नए-नए रूपों जैसे संबंधित कलाओं में व्यावहारिक प्रशिक्षण।
: विद्यालयी छात्रों के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों का उत्पादन और प्रस्तुति जो संवादात्मक सत्र के माध्यम से व्यवहारिक रूप में दिया जाता है।

कार्यशाला की सफलता के लिए 'कठपुतली और पठकथा लेखन की अवधारणा' पर परिचयात्मक व्याख्यान सत्र बहुत महत्वपूर्ण है। कठपुतली के खेल का मूल एक अच्छा शैक्षिक संदेश होता है। कठपुतली नाटकों की पठकथा लिखने पर जोर दिया जाता है। दर्शकों को ध्यान में रखते हुए कठपुतली नाटकों के लिए उपयुक्त विषय चयन किए जाते हैं और प्रतिभागियों द्वारा तैयार की गई कहानियों पर चर्चा के बाद कुछ अच्छी कहानियों का चयन किया जाता है।

शिक्षकों को कठपुतली के क्षेत्रीय पारंपरिक रूपों से परिचित कराने के लिए समय-समय पर देश के विभिन्न हिस्सों से पारंपरिक कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है। प्रतिभागियों को देश में कठपुतली नाट्यकला की विभिन्न शैलियों से परिचित कराने के लिए भारत के पारंपरिक कठपुतली रंगमंच पर व्याख्यान-प्रदर्शन आयोजित किए जाते है। प्रतिभागियों को कागज की सरल कठपुतलियां बनाना जैसे की उंगली, मुखौटे और पेपर रॉड कठपुलियां और इसमें हस्तकौशल विकसित किया जाता है।

प्रतिभागियों को सूचित किया जाता है कि कार्यशाला का उद्देश्य शैक्षिक अवधारणाओं को व्यक्त करने और कक्षा में सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आसानी से उपलब्ध और व्यर्थ सामानों से कठपुतलियां बनाई जाती है।

प्रत्येक व्यवहारिक सत्र के बाद इन सभी कठपुतलियों का हस्तकौशल सिखाया जाता है। शिक्षक विभिन्न प्रकार की कठपुतलियों की सहायता से शैक्षिक कठपुतली कार्यक्रम बनाना सीखते हैं।

ऐतिहासिक महत्वों के स्थानों और संग्रहालयों का शैक्षिक भ्रमण आयोजित किया जाता है।

रंगमंच के लिए लोक संगीत/संगीत पर भी सत्र का आयोजन किया जाता है। केन्द्र द्वारा विकसित आधुनिक तकनीक का उपयोग कर कठपुतली कला के संसाधन सामग्री का समय-समय पर उपयोग किया जाता है।

उक्त कार्यशाला के सफल समापन के बाद भाग लेने वाले शिक्षक के माध्यम से विद्यालय को कठपुतली किट के साथ सीसीआरटी के कुछ शैक्षिक प्रकाशन उपहार में दिए जाते है।